शोध मंथन, 2018 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 5.463 (SJIF)
UGC Approved Journal No. 40908

ईंट भट्टा मजदूरों की सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

बाबूलाल जाटव*, डॉ0 अनिल पालीवाल**

**शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान,*

***व्याख्याता, पी.जी. समाज शास्त्र विभाग एस.बी.पी. राजकीय महाविद्यालय, डूंगरपुर*

सारांश

भारत एक विकासशील राष्ट्र है जिसमें विभिन्न प्रकार के उद्योग संचालित हैं। इन उद्योगों में से ईंट भट्टा उद्योग महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह उद्योग सिंधुघाटी सभ्यता के समय से माना जाता है। आज विश्व के अधिकतम राष्ट्र ईंट भट्टा उद्योगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर हम भारत की बात करें तो भारत के विभिन्न राज्यों में ईंट भट्टा उद्योग संचालित हैं। राजस्थन में भी लगभग सभी जिलों में ईंट भट्टा उद्योग संचालित हैं। किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था उद्योगों पर निर्भर करती है। ये उद्योग मजदूरों पर निर्भर होते हैं। उद्योग कैसा भी हो, मजदूरों के अभाव में अपनी उत्पादकता में वृद्वि नहीं कर सकता । इस तरह मजदूर उत्पादन कार्य में एक सक्रिय कडी के रुप भूमिका अदा करते हैं। लेकिन इन उद्योगों में कार्यरत मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति बहुत ही खराब होती है। मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति को सुधारने के लिए अनेक कानूनों का भी निर्माण किया गया लेकिन सही तरह से क्रियान्वित न होने के कारण सब बेकार रहा।

मूल शब्द– *विकासशील राष्ट्र, उद्योग, मजदूर, सिंधुघाटी सभ्यता, प्रतिनिधित्व, निर्भरता, सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति, कानून।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

बाबूलाल जाटव*, डॉ0 अनिल पालीवाल**

ईंट भट्टा मजदूरों की सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोध मंथन, जून 2018, पेज सं0 141–146

Article No. 21
http://anubooks.com
?page_id=581

प्रस्तावना

भारत एक विकासशील राष्ट्र है जिसमें उत्तर के पर्वतीय क्षेत्र से लेकर दक्षिण में समुद्र तट तक तथा पूर्व में गंगा सिंधु के मैदान से लेकर पश्चिमी राजस्थान के मिट्टी के धोरों तक अनेक उद्योग–धन्धे संचालित है। भारत में कृषि उद्योग, जूट उद्योग, कपास उद्योग, कोयला उद्योग, ग्रेनाइट उद्योग, चमड़ा उद्योग, खनन उद्योग, एवं ईंट–भट्टा उद्योग समाज की मांग एवं समाज के विकास हेतु महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ईंट–भट्टा उद्योग सम्पूर्ण विश्व में संचालित उद्योगो में से प्राचीनतम उद्योग के रूप में माना जाता है। इस उद्योग का सम्बन्ध प्राचीन सभ्यताओं से भी रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई के दौरान ईंटों के प्रयोग के प्रमाण मिले है। इस रूप में यह उद्योग प्राचीनतम उद्योगो में से एक है।

किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था उद्योगों पर निर्भर करती है। ये उद्योग मजदूरों पर निर्भर होते है। उद्योग कैसा भी हो, मजदूरों के अभाव में अपनी उत्पादकता में वृद्धि नहीं कर सकता है। इस रूप में मजदूर उत्पादन में एक सक्रीय कड़ी के रूप में भूमिका अदा करते है। एक राष्ट्र के विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक संसाधन बेकार हो जायेंगे यदि उनका समुचित एवं व्यस्थित ढंग से उपयोग नही किया गया तो। इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग मजदूरों के अभाव में असम्भव सा प्रतीत होगा।

संगठित मजदूरों मे हम उन मजदूरो को सम्मिलित करते है जो एक स्थान विशेष में स्थित उद्योगों में कार्यरत है तथा जिनका अपना एक संगठनात्मक ढांचा होता है। मजदूरों को मजदूरी का समय तथा सुविधाओं का निर्धारण मजदूर स्वयं न करके संगठनात्मक ढांचे द्वारा किया जाता है। असंगठित मजदूर वह मजदूर है जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अथवा मजदूरी के लिए बिखरे होते है। जिनका कोई संगठनात्मक ढांचा नही होता है, इनकी मजदूरी, कार्य के घन्टे एवं सुविधओं का निर्धारण स्वयं मजदूरों द्वारा हो किया जाता है।

ईंट–भट्टा मजदूरों की प्रस्थिति में कुछ परिवर्तन अवश्य आया है। प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या यह परिवर्तन पर्याप्त है? क्या सीकर जिले के खण्डेला एवं श्रीमाधोपुर पंचायत समितियों में ईंट–भट्टा मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति में कोई विशिष्ट एवं सुदृढ़ परिवर्तन आया है? दोनो पंचायत समितियों में क्या पहले भी अध्ययन हुए है? क्या वर्तमान समय में परिवर्तन की गति पहले वाले अध्ययन के अनुरूप है या भिन्न? आदि यक्ष प्रश्नों के उत्तर खोजने में प्रस्तुत अध्ययन महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

उद्देश्य

1. ईंट–भट्टा मजदूरों की लिंग, शिक्षा, नातेदारी के आधार पर सामाजिक प्रस्थिति का विश्लेषण करना।
2. ईंट–भट्टा मजदूरों की आय–व्यय के आधार पर आर्थिक प्रस्थिति का विश्लेषण करना।
3. ईंट–भट्टा मजदूर क्या बंधुआ मजदूरी के लिए उत्तरदायी है?
4. सरकारी नीतियों का मजदूरों पर पड़ने वाले प्रभावों की वास्तविकताओं को जानना।
5. सीकर जिले की पंचायत समितियों खण्डेला व श्रीमाधोपुर के ईंट–भट्टा मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. ईंट–भट्टा मजदूरों के उत्थान के लिए सुझाव देना।

प्राक्कल्पना

किसी भी अनुसंधान को परिसीमित करने हेतु उसके उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्राक्कल्पनाओं का निर्माण आवश्यक होता है। प्राक्कल्पनाओं के निष्कर्ष से मेल होने के पश्चात् सिद्धान्त का निर्माण होता है।

1. ईंट–भट्टा मजदूरों की सामाजिक प्रस्थिति में नकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे है।

2. ईंट–भट्टा मजदूरों की आर्थिक प्रस्थिति सुदृढ़ हो रही है।
3. ईंट–भट्टा मजदूर बंधुआ मजदूरी के लिए उत्तरदायी है?
4. सीकर जिले की पंचायत समिति श्रीमाधोपुर की तुलना में खण्डेला में कार्यरत मजदूरों की स्थिति अधिक सुदृढ़ दृष्टिगोचर हो रही है।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित अनुसंधान की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो ही स्त्रोतो से तथ्यों का संकलन किया जायेगा। द्वितीयक तथ्यों का संकलन अन्तरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर प्रकाशित विभिन्न प्रतिवेदनों, विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओ, समाचार–पत्रो, सेमीनार में प्रस्तुत शोध–पत्रो के माध्यम से किया जायेगा। इन्टरनेट के द्वारा भी विभिन्न तथ्यों को संकलित किया जायेगा।

सीकर जिले की दोनों पंचायत समितियों श्रीमाधोपुर एवं खण्डेला में कार्यरत मजदूरों में से प्रत्येक से कुल 100–100 ईंट–भट्टा मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन किया जायेगा। इनमें से सविचार अथवा उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से 50 महिला एवं 50 पुरूष प्रत्येक पंचायत समिति से उत्तरदाता हेतु चयनित किए जायेगें। इन उत्तरदाताओं से प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा। दोनो पंचायत समितियों में से 6–6 उत्तरदाता जिनमें से 3 महिला एवं 3 पुरूषों का वैयक्तिक अध्ययन प्रविधि के द्वारा अध्ययन किया जायेगा।

साहित्य की समीक्षा

सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1958) प्रस्तुत पुस्तक में ईंट निर्माण उद्योग और भूमिहीन मजदूरों को रोजगार देने के बारे मे प्रकाश डाला है। साथ ही ऐसे उद्योगों का उल्लेख किया गया है जो ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्र में संचालित हैं। लेखक ने उक्त पुस्तक में 6वीं योजना के अन्त तक मौजुदा ग्रामीण श्रम बल बढानें की भी बात कही है। उन्होंने सिफारिश की है कि ईंट उद्योग में ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रो के स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मिट्टी के संसाधनों के जरिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए बड़ी सम्भावनाएं है क्योंकि ग्रामीण रोजगार की योजनाओं में ईंट उद्योगों के विकास के लिए प्राथमिकताएं दी जा रही है। यद्यपि इस अध्ययन से ईंट उद्योग के महत्व एवं रोजगार के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है, लेकिन यह ईंट उद्योग के मजदूरों से सम्बधित मजदूरी पद्धति के बारे में कुछ भी सुझाव नहीं देता है।

अग्रवाल, एम. एल. (1959) प्रस्तुत पुस्तक में ईंट भट्टा मजदुरों की निम्न सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का उल्लेख किया गया है। लेखक ने उतर–प्रदेश के लखनऊ के गाजीपुर गांव के ईंट भट्टा उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में लेखक ने पाय कि अधिकतर उच्च जाति के लोगो की तुलना में निम्न जाति के हिन्दु ईंट–भट्टा उद्योगों में अधिक कार्य करते है। इस प्रकार इस अध्ययन में पाया कि ईंट–भट्टा उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति अत्यन्त ही निम्न होती है और उनका जीवन जीने का स्तर भी निम्न होता है। ये मजदूर अनेक प्रकार की समस्याओं का भी सामना करते है।

पाटिल, बी. आर. (1975) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बताया कि किस प्रकार ईंट भट्टा मजदूर बंधुआ मजदूरों के रूप में इन उद्योगों में दिन–रात, बिना आराम किये हुए और निम्न मजदूरी के लिए काम करते है। आपने इस अध्ययन में पाया कि ईंट–भट्टा उद्योगो मे लगे मजदूरो को प्रर्याप्त छुट्टी भी नहीं मिल पाती है और न ही उनका कोई संगठनात्मक ढांचा होता

है लेकिन इस अध्ययन में यह नही बताया कि ईंट–भट्टा मजदूरो का शोषण रोकने के लिए और उन्हे एकीकृत करने के लिए किन तरीको को अपनाया जाए।

उपाध्याय–चवन, वी॰डी॰ (1991) –प्रस्तुत पुस्तक ''सांगली जिले मे ईंट निर्माण उद्योग में आप्रवासी श्रमिकों का एक सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण'' में ईंट–भट्टों मे काम करने वाले आप्रवासी श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन किया है। इस अध्ययन मे यह पाया गया कि निम्न जीवन स्तर, गरीबी, कर्ज मे डूबे हुए, अषिक्षा और ईंट–भट्टा उद्योगो में श्रमिकों की बेरोजगारी के कारणो की व्यापक समीक्षा की गई है। लेकिन इस अध्ययन में यह सुझाव नहीं दिया गया कि ईंट–उद्योगों के मजदूरों की समस्याओं को कैसे दूर किया जाए।

सिन्हा, मन्जुलता (1994) – प्रस्तुत अध्ययन कलकता शहर से लगभग 20 किलोमीटर दूर स्थित अलीपुर के चार ईंट–भट्टों का एक सर्वेक्षण है। इस अध्ययन में महिला मजदूरों की स्थिति एवं कार्यप्रणाली का उल्लेख किया गया है। लेखक का यह सर्वेक्षण मार्च, 1987 का है। लेखक ने अपने इस सर्वेक्षण में ईंट–भट्टा महिला मजदूरों की भर्ती प्रक्रिया, कामकाजी परिस्थितियों, मजदूरी संरचना और कल्याणकारी उपाय को शामिल किया है। इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष यह थे कि महिला मजदूर शोषण का सामना करती है उनकी सेवा स्थिति के सम्बन्ध में उनके अधिकारों और विशेषाधिकारों से अनजान रहती है। लेकिन अध्ययन में दिए गए इन सुझावों को व्यावहारिक रूप से लागू करना सम्भव नही है।

सिंह, दरमपाल (2003) प्रस्तुत अध्ययन हरियाणा राज्य के हिसार डिविजन के 5 जिलों का है जिसमे ईंट–भट्टा उद्योगों में काम करने वाली महिला श्रमिकों का अध्ययन है। यह अध्ययन हिसार डिविजन के पांच जिलों में स्थित 547 इकाइयों में से 54 ईट भट्टों का है। इस अध्ययन में ईंट–भट्टा उद्योगों मे काम करने वाली महिला मजदूरों की आवास, स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा और कल्याणकारी सुविधाओं से सम्बन्धित पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ईंट भट्टा मालिकों को ईंट–भट्टों पर काम करने वाली महिला मजदूरो को उचित स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याणकारी उपाय प्रदान करने का सुझाव दिया है।

मण्डल, अमल (2005) प्रस्तुत पुस्तक में ईंट–भट्टा कारखानो में काम करने वाली महिला मजदूरों की समस्याओं को उजागर किया गया है। इस अध्ययन में बताया गया है कि ईंट कारखानों का काम मौसमी है और रोजगार भी संविदात्मक है। यह काम पूरी तरह से असुरक्षित रोजगार है जिसमें मजदूरी भी एक साथ न मिलकर टुकड़ो में मिलती है। अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिकतर ईंट–भट्टा कारखानों मे महिला ही मजदूर के रूप में कार्य करती है जो अक्सर निम्न जाति और अनपढ़ होती है। इस अध्ययन के माध्यम से यह भी स्पष्ट हुआ है कि ईंट भट्टा उद्योगों मे महिला मजदूरो के बच्चो को रखने, काम के निश्चित घण्टों का अभाव, पीने के पानी की समस्या एवं प्रथक से महिला शौचालयों का अभाव आदि समस्याएं उजागर हुई है।

सुधीर कटियार[18] (2011) यह पुस्तक पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ईंट भट्टा मजदूरों से सम्बन्धित है। इसमें मजदूरों की कार्य दशाओं, उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति, बंधुआ मजदूरों की स्थिति आदि का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया गया हैं। साथ ही यह भी बताया गया है कि लगभग सभी ईंट–भट्टा उद्योगों में मजदूरों के रूप में वे ही व्यक्ति काम करते हैं जो समाज के सबसे वंचित वर्ग यथा अनुसूचित जाति व अल्पसंख्यक हैं। गांवों में भी इनका स्थान संरचना की दृष्टि से निम्न है । इसी अध्ययन में 'नरेगा' का भी उल्लेख मिलता है जिसमें वे ही मजदूर काम करते हैं जिनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न है । ऐसे मजदूरों की संख्या लगभग तीन चौथाई बताई गई है । साथ ही इसमें श्रम ठेकेदारों का भी उल्लेख मिलता है जो मजदूरों की मजबूरी का फायदा उठाकर उनका शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शोषण करते हैं ।

नण्डाल, सन्तोष एवं कुमार, प्रवीण (2016) प्रस्तुत अध्ययन हरियाणा के झज्जर जिले का है जिसमें लगभग 452 ईंट–भट्टे संचालित है। ये सभी ईंट–भट्टे उत्पादन की मात्रा की दृष्टि से तीन वर्गो में विभाजित किये गये है –

1. 40,000 से 50,000 ईंटे प्रतिदिन तैयार करने वाले
2. 70,000 से 80,000 ईंटे प्रतिदिन तैयार करने वाले एवं
3. 80,000 से 1,00,000 ईंटे प्रतिदिन तैयार करने वाले भट्टे।

इन भटटों का कार्यकाल अक्टूबर से जून तक होता है तथा मानसून काल में इन्हे बंद कर दिया जाता है।

गुप्ता, जयोति (2016) प्रस्तुत अध्ययन उत्तर भारत के हरियाणा एवं गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) में संचालित दो ईंट–भट्टों का है। ये अनौपचारिक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अनियमित तरीके से संचालित होते हैं तथा कानूनी दायरे से बाहर होते है। ईंट–भट्टा मालिकों और ठेकेदारों द्वारा मजदूरों को काम पर लाने के लिए बाध्य किया जाता है। कई समितियों ने कामकाजी परिस्थितियों में सुधार के लिए प्रयास किये है, लेकिन इनमें से कुछ प्रयास ही कार्यान्वित हुए है। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि श्रमिको को अग्रिम भुगतान एक ऐसी प्रणाली है जो श्रम के मांग और आपूर्ति अर्थव्यवस्था के एक निश्चित सह–सम्बन्ध से विकसित हुआ है।

अभय, बी. एस. (2017) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने ईंट–भट्टों में काम करने वाले बंधुआ मजदूरों का उल्लेख किया है। लेखक ने बताया है कि ईंट–भट्टों में काम करने के लिए मजदूर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए जाता है। लेकिन वह धीरे–धीरे बंधुआ मजदूरा की श्रेणी में आ जाता है।

लेखक ने उक्त पुस्तक में उल्लेख किया है कि श्रम विभाग द्वारा कराये गये सर्वेक्षण के आधार पर बताया गया है कि जयपुर नगर निगम सीमा में संचालित ईंट–भट्टों पर काम करने वाले मजदूरों मे 45: मजदूर बंधुआ हैं जिनमें अधिकतर अनुसूचित जाति एंव कमजोर तबके के है। लेकिन ये ईंट–भट्टा मजदूर स्थानीय पुलिस अधिकारियों एवं भट्टा मालिको की सांठ–गांठ के कारण बंधुआ मजदूर के रूप में बेबस है। इन भट्टो पर कोई कानूनी प्रावधान लागू नही किया जाता यथा–न्यूनतम वेतन अधिनियम, लेबर्स एक्ट, फैक्ट्रीज एण्ड वायलर्स एक्ट, मैटरनिटी बेनीफिट एक्ट आदि।

लेखक ने यह भी स्पष्ट किया है कि ईंट–भट्टों के निर्माता तो रेत से सोना पैदा करते है लेकिन इसके लिए ईंट–भट्टा मजदूरों को भट्टो में गलना पड़ता है। जयपुर शहर के आस–पास एवं सीकर जिले में जगह–जगह पर ईंट–भट्टे बने हुए है। यहां रेत से ईंट तैयार होती है ओर शहरो में लायी जाती है। शहर में नित नये बनते मकान और अट्टालिकाओं के नीचे पसीना बहाते ओर नींव का पत्थर का काम करते हे ये ईंट–भट्टा मजदूर।

संदर्भ

1. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली : (1958) 'द कल्चरल हेरिटेज ऑफ इण्डिया' द रामाकृष्ण मिशन, इन्स्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता, Vol. 1 पृ0 **15–22**
2. अग्रवाल, एम.एल. : (1959) 'सोशियो–इकॉनोमिक कंडिशन ऑफ ब्रिक किन वर्कर्स इन द गाजीपुर विलेज' ए रिसर्च प्रोजेक्ट रिपोर्ट ।
3. पाटिल, बी.आर : (1975) 'ब्रिक किन वर्कर्स इन ग्रेटर बेंगलोर' इण्डियन जरनल ऑफ लेबर इकॉनोमिक नई दिल्ली, Vol. XXVII 1975, पृ0 **25–28**
4. उपाध्याय–चयन, वी.डी. : (1991) 'ए सोशियो–इकॉनोमिक सर्वे ऑफ इम्माइग्रेन्ट लेबर इन ब्रिक मेकिंग इण्डस्ट्री इन द सांगली डिस्ट्रिक्ट' शिवाजी यूनिवरसिटी, कोल्हापुर

5. सिन्हा, मंजु लता : (1994) ''कण्डीशन्स ऑफ वॉमेन वर्कर्स इन ब्रिक किन्स'' मैन इन इण्डिया, कोलकाता पेज **21–25**
6. सिंह, दरम पाल : (2003) ''लिविंग कण्डिशन्स ऑफ वोमेन इन ब्रिक किन इण्डस्ट्री ऑफ इण्डिया : रिफ्लेक्टिंग द ऐजेण्डा फोर सोशियल वर्क इण्टरवेन्सन'' नागासाकी अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जापान
7. मण्डल, अमल :(2005) 'वॉमेन वर्कर्स इन ब्रिक फैक्ट्री' जैन बुक ऐजेन्सी, नई दिल्ली, ISBN . 9788172111779
8. कटियार सुधीर : (2012) व्यूनेरेबिलिटी असेसमेंट ऑफ ब्रिक किन वर्कर्स इन फाइव डिस्ट्रिक्ट ऑफ वेस्ट उत्तर प्रदेश' इन्टरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन, नई दिल्ली।
9. नण्डाल, सन्तोष एवं कुमार, प्रवीण : (2016) ''वॉमेन वर्कर्स इन इनफोर्मल इकॉनोमी : ए स्टेडी ऑफ ब्रिक किन इन हरियाणा'' Vol . 15 ISSN . 2320 . 2939 पेज – **1–22**
10. गुप्ता, जयोति : (2016) ''इनफोर्मल लेबर इन ब्रिक किन्स : नीड फोर रेगुलेशन'' टवस . 38 पेज – **3282 – 3292**
11. अभय, बलवीर सिंह : (2017) ''मुक्त बंधुआ मजदूर (सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य), अपोलो प्रकाशन जयपुर ISSN . 978 . 93 . 80567. 91.4 पेज **– 52–54**